असम उड़िया युवा छात्र परिषद के नुआखाई भेटघाट पर्व पर
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का संबोधन

दिनांक 1 अक्टूबर 2023, रविवार	समय : 12:00 PM	स्थान : श्रीमंत शंकरदव कलाक्षेत्र, पंजाबाड़ी

- बोड़ोलैंड टेरिटोरियल रिजन (BTR) के कार्यकारी सदस्य श्री संजीत तांती जी,
- ओड़िसा के शिक्षा विकास परिषद के चेयरमैन डॉ. सदानन्द दीक्षित जी,
- कलिंगा सांस्कृतिक संसद, गुवाहाटी के महासचिव श्री मनोरंजन दास जी,
- असम उड़िया युवा छात्र परिषद के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीधर तांती जी,
- महासचिव श्री पंकज महानन्दा जी
- कार्यक्रम में उपस्थित अन्य अतिथिगण
- परिषद के सम्मानित पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्तागण
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार,

सर्वप्रथम आप सभी को और समस्त उड़िया समाज को आपके पारंपरिक उत्सव नुआ खाई भेटघाट पर्व की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। इस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए असम उड़िया युवा छात्र परिषद को धन्यवाद देता हूं।

नुआ खाई भेटघाट कृषि से जुड़ा उत्सव है। यह त्योहार बदलते मौसम के साथ नई फसल का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है। यह नए चावल खाने के महत्व को दर्शाता है। उड़िया समाज के किसान अन्न की पूजा करते हैं और विशेष प्रकार का भोजन तैयार करते हैं।

मित्रों,

भारत विविधताओ को देश है। यहा विभिन्न जाति, धर्म, भाषा, कला, सस्कृति का वास है। विविधताओ के बावजूद यहा एकता है, जो हमारे देश की विशेषता है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ पर "विविधता में एकता" देखनो को मिलती है। विभिन्न धर्मों, सस्कृतियों और परम्पराओ के लोग अपने धर्म के लिये एक-दूसरे की भावनाओ को आहत किए बिना एक साथ रहते हैं। असम में विभन्न धर्मों और समुदाय के लोग भाईचारे और सद्भावना के साथ रहते हैं। उड़िया सामज के लोग भी राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नुआखाई महोत्सव देश की आर्थिक प्रगति में कृषि की प्रासगिकता के बारे में समाज को एक महान सदेश देता है। हमारा भारत कृषि प्रधान देश है। यह किसानों को कृषि क्षेत्र के विकास में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

भारत की अर्थव्यवस्था में किसानों और कृषि व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसान और कृषि इस देश की धरोहर हैं, उनके द्वारा की जाने वाली किसानी इस देश के लिए उत्सव है। यह त्योहार भी उनके परिश्रम के फल को उत्सव के रूप में मनाने का अवसर है।

नुआखाई असम में रहने वाले पश्चिमी ओडिशा के लोगों के बीच एक एकजुट और एकीकृत शक्ति है। वे नुआखाई के अवसर को एकजुट होकर इस उत्सव को मनाते हैं। इसने समय बीतने के साथ अपनी कुछ विशालता और विविधता खो दी है, लेकिन नुआखाई अभी भी एक ऐसा अवसर है, जो सम्बलपुरी संस्कृति का बढ़ावा देता है।

मुझे खुशी है कि पश्चिम ओड़िसा, दक्षिणी छत्तीसगढ़, झारखण्ड की तरह असम में भी उड़िया समाज के लोग इस उत्सव को उत्साह से मनाते हैं। मैं इस परम्परा को बरकरार रखने के लिए असम उड़िया युवा छात्र परिषद को धन्यवाद देता हूँ और इस कार्यक्रम के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिन्द।